अंक 27

पर्व-7वां

धार्मिक बाल त्रैमासिक पत्रिका

चहकती चेतना

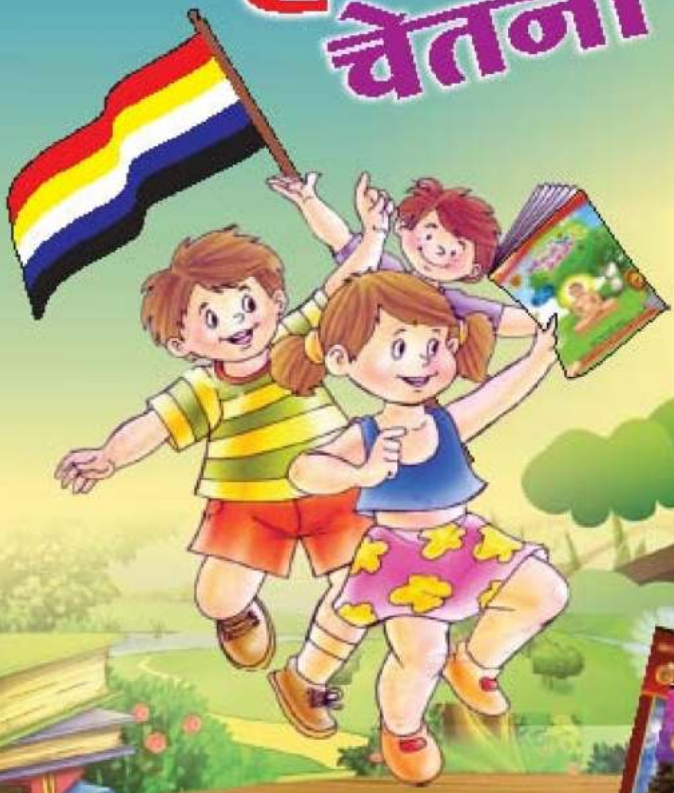

संपादक - विराग शास्त्री, जबलपुर

प्रकाशक - सूरज बेन अमुलखराय सेठ स्मृति ट्रस्ट, मुंबई

संस्थापक - आचार्य कुलकुल सर्वोदय फाउन्डेशन, जबलपुर (म.प्र.)

आध्यात्मिक, तात्विक,धार्मिक एवं नैतिक
बाल त्रैमासिक पत्रिका

चहकती चेतना

प्रकाशक
श्रीमति सूरजबेन अमुलखराय सेठ स्मृति ट्रस्ट, मुम्बई

संस्थापक
आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाऊन्डेशन, जबलपुर म.प्र.

संपादक
विराग शास्त्री, जबलपुर

प्रबंध संपादक
स्वस्ति विराग जैन, जबलपुर

डिजाइन/ ग्राफिक्स
गुरूदेव ग्राफिक्स, जबलपुर

परमसंरक्षक
श्री अनंतराय ए.सेठ, मुम्बई
श्री प्रेमचंदजी बजाज, कोटा

संरक्षक
श्री आलोक जैन, कानपुर
श्री सुनीलभाई. जे. शाह, भायंदर, मुम्बई

मुद्रण व्यवस्था
स्वस्ति कम्प्यूटर्स, जबलपुर

प्रकाशकीय व संपादकीय कार्यालय
"चहकती चेतना"
सर्वोदय, 702, जैन टेलीकॉम,
फूटाताल, लाल स्कूल के पास, जबलपुर म.प्र. 482002
9300642434, 09373294684
chehaktichetna@yahoo.com

क्र.	विषय	पेज
1	संपादकीय	1
2	कविता - लोभ	2
3	सिद्धक्षेत्र - नेमावर	3
4	कविता - जन्मदिन	4
5	स्वर्ग के देवो की विशेषता	5
6	पापों का प्रायश्चित	6-7
7	प्रेरक प्रसंग	8
8	तीर्थंकर भगवंतों की विशेषता	9
9	सेव ने गलाया मान	10
10	कुरकुरे में प्लास्टिक	11
11	चक्रवर्ती के 14 रत्न	12
12	प्रेरक प्रसंग - निर्णय/भाग्य	13
13	शील की रक्षा	14-15
14	अब नहीं लगाउंगा	16-17
15	अभिमान का कोई आधार...	18
16	प्रश्न आपके उत्तर जिनवाणी के	19
17	वो कौन थी	20
18	अहंकार उतर गया	21
19	सीख - बनाओ	22
20	भजन	23
21	पाठकों का पत्र/जिसको राखे..	24
22	कंदमूल एवं अन्य अभक्ष्य...	25-26
23	समाचार	27-28
24	बंदरमामा	29
25	जन्मदिवस	30
26	कॉमिक्स	31-32

सदस्यता शुल्क - 400 रू. (तीन वर्ष हेतु)
1200 रू. (दस वर्ष हेतु)

चहकती चेतना के पूर्व प्रकाशित संपूर्ण अंक प्राप्त करने के लिये लॉग ऑन करें

www.vitragvani.com

सदस्यता राशि अथवा सहयोग राशि आप "चहकती चेतना" के नाम से ड्राफ्ट/चैक/मनीआर्डर से भेज सकते हैं। आप यह राशि कोर बैंकिंग से "चहकती चेतना" के बचत खाते में जमा करके हमें सूचित सकते हैं। पंजाब नेशनल बैंक,फुहारा चौक, जबलपुर बचत खाता क्र.- 1937000101030106

संपादकीय

प्यारे बच्चो ! एक बार फिर आपको प्यार भरा जय जिनेन्द्र। अब सभी बच्चों की परीक्षाओं के रिजल्ट आ गये होंगे। आप सभी को उज्जवल भविष्य की शुभकामनायें। आपके जीवन में लौकिक शिक्षा का महत्व तो है ही लेकिन धार्मिक शिक्षा का भी बहुत महत्व है। आप ये न समझें कि धार्मिक शिक्षा हमारे जीवन में किसी काम की नहीं है। इसके लिये मैं आपको दो सत्य घटनायें बता रहा हूँ।

भारत सरकार के एक आई पी एस अधिकारी हैं श्री अमरीश जैन। वे इस समय नार्थ इण्डिया के 10 राज्यों की पुलिस के बड़े अधिकारी हैं। जिस समय उन्होंने इस पद के लिये परीक्षा दी उस समय मात्र 10 ही पद थे और 30,000 परीक्षार्थियों ने इस पद के लिये परीक्षा दी। उन्होंने यह परीक्षा पास कर ली और उन्हें इन्टरव्यू के लिये बुलाया गया। इन्टरव्यू में उनसे उनके विषय के बारे में कुछ नहीं पूछा गया। उनसे एक ही प्रश्न पूछा गया कि आप जैन क्यों हैं ? इस प्रश्न का उत्तर उन्होंने 30 मिनिट में दिया। उनकी प्रभावशाली बातें सुनकर उनका तुरन्त चयन कर लिया। जब उनसे पूछा गया कि आपने जैन शब्द की इतनी सुन्दर व्याख्या कहाँ से सीखी ? श्री अमरीशजी ने उत्तर दिया कि मैं बचपन में जैन पाठशाला जाता था और मेरी माँ ने मुझे बचपन से ही जैनत्व के संस्कार दिये हैं। यह उसका ही सुफल है।

दूसरी घटना – एक बड़ी विदेशी कंपनी के लिये भारत के एक जैन छात्र का चयन हुआ। उससे इन्टरव्यू में मात्र एक प्रश्न पूछा गया कि आप जैन हैं तो ये बताईये कि तीर्थंकर और भगवान में क्या अंतर है ? उस युवक ने तीर्थंकर और भगवान में 36 अंतर बता दिये। इन्टरव्यू बोर्ड ने उसका सिलेक्शन कर लिया। उस युवक ने भी बचपन में पाठशाला के संस्कार प्राप्त किये थे।

आप समझ गये होंगे कि धार्मिक शिक्षा का कितना महत्व है। तो बच्चो! किसी भी कीमत पर जैन धर्म को जानना समझना और जितना हो सके जैन आचरण जीवन में लाने का प्रयास करना। आपका जीवन उज्जवल हो इसी भावना के साथ –

आपका विराग

लोभ

चले सैर को लोभीराम।
देखा एक लटकता आम।
इस पर चढ़ने लगे पेड़ पर।
फिसला पैर तो गिरे धड़ाम।
चोरी का फल उसने पाया।
लोभ पाप का बाप बताया।

हमारे तीर्थ

सिद्ध क्षेत्र नेमावर

मध्यप्रदेश के इंदौर नगर से 130 किमी की एवं इटारसी से 100 किमी की दूरी पर देवास जिले में सिद्ध क्षेत्र नेमावर स्थित है। यह नेमावर तीर्थ रेवा नदी के किनारे स्थित है। यहाँ भगवान सम्भवनाथ को केवलज्ञान हुआ एवं रावण के सुपुत्र आदिकुमार एवं अन्य अनेक दिगम्बर साधुओं ने मोक्ष प्राप्त किया। ऐतिहासिक प्रमाणों के अनुसार राम और रावण के युद्ध के बाद रावण के पुत्र आदि कुमार ने यहीं पर घोर तपस्या की थी। यहाँ पर 7000 वर्ष पूर्व दिगम्बर मुनिराज आत्मसाधना करते थे। इस तीर्थ का पूर्व नाम नीमावती नगरी था। यह पूर्णतः जैन नगर था। विक्रम संवत् 1880 में अर्थात् लगभग 190 वर्ष पूर्व नर्मदा नदी में से भगवान आदिनाथ, मुनिसुव्रतनाथ और भगवान शांतिनाथ की तीन विशाल दिगम्बर जैन प्रतिमायें पद्मासन मुद्रा में प्राप्त हुईं। वर्तमान में यहाँ पंचबालयति जिनालय एवं त्रिकाल चौबीसी जिनालय का कार्य चल रहा है।

यहाँ पर आवास और भोजन की समुचित व्यवस्था उपलब्ध है। संपर्क सूत्र- 07274-277818

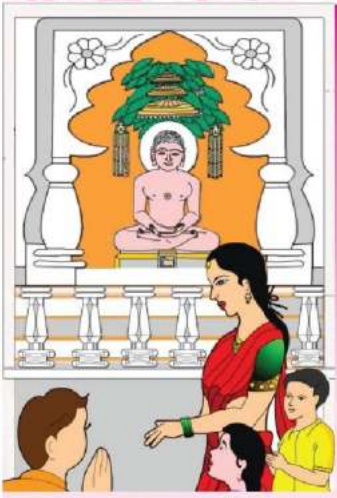

जन्म दिवस

मम्मी मेरा जन्म-दिवस है,
केक मिठाई लाओ ना ।
नये-नये कपड़े दिलवा दो,
सबको घर पर बुलाओ ना।

चुन्नू तेरा जन्म - दिवस है,
पहले तू मंदिर जाना ।
भगवान का अभिषेक तू करना,
मुनिवर की भक्ति गाना ।

टॉफी - बिस्किट नहीं बांटना,
घर का बना केक खाना।
जन्म मरण का अंत करे तू,
फिर न लौट न भव में आना।

— रचना विराग शास्त्री

स्वर्ग के देवों की विशेषतायें

1. देवों का आहार तो होता है परन्तु उनका निहार मल मूत्र, पसीना आदि सप्त धातुयें नहीं होतीं हैं।
2. देवों के बाल नहीं होते और उनके शरीर में निगोदिया जीव भी नहीं होते।
3. देवों की परछाईं नहीं पड़ती एवं उनकी पलक भी नहीं झपकती।
4. देवों के शरीर के अंग अत्यंत सुन्दर और समान अनुपात में होते हैं।
5. देवों का अकाल मरण नहीं होता।
6. सम्यग्दृष्टि देव प्रतिदिन अभिषेक पूजन करते हैं।
7. एक देव की कम से कम 32 देवियाँ होतीं हैं।
8. पंचम स्वर्ग के लौकान्तिक देव तीर्थंकर के दीक्षा कल्याणक में ही आते हैं और अहमिन्द्र आदि सोलहवें स्वर्ग के देव वहीं से तीर्थंकर को नमस्कार करते हैं। सौधर्म आदि अन्य देव तीर्थंकर के कल्याणकों में आते हैं।
9. देवों को रोग नहीं होते हैं।
10. देवों में स्त्री और पुरुष वेद होते हैं वहाँ नंपुसक नहीं होते।
11. देवों की आयु कम से कम 10000 वर्ष और अधिकतम 33 सागर होती है।

कहानी

पापों का प्रायश्चित्त

जम्बूद्वीप के विदेह क्षेत्र में एक अल्का नाम की अत्यंत सुन्दर नगरी है। बहुत समय पहले विद्याधरों का राजा महाबल राज्य करता था। राजा महाबल धर्म और नीति से प्रजा के विकास के लिये कार्य करता था। राजा जिनधर्म का भक्त था उसके स्वयंबुद्ध, महामति, संभिन्न, शतमति नाम के चार मंत्री थे। इनमें से स्वयंबुद्ध नाम का मंत्री भी जिनधर्म में आस्था रखता था बाकी तीन मंत्रियों को जिनधर्म से द्वेष था।

एक दिन महाराजा महाबल अपनी सभा में बैठे थे। उनका जन्मदिवस धूमधाम से मनाया जा रहा था। राजसभा के सभी सदस्य अपने-अपने स्थान पर बैठे हुए थे। राजा महाबल के अधीन अनेक राजा अपनी मूल्यवान भेंट राजा को अर्पित कर रहे थे तभी प्रधानमंत्री स्वयंबुद्ध ने राजा से कहा कि महाराज! आपको जो सन्मान प्राप्त हो रहा है वह आपके पुण्य का फल है। पुण्य से ही ऐसा वैभव व यश प्राप्त होता है। बाकी तीन मंत्रियों को स्वयंबुद्ध मंत्री की बात पसंद नहीं आई और उन्हें उल्टी शिक्षा दी। तब स्वयंबुद्ध मंत्री ने राजा दण्ड की घटना सुनाकर धर्म का महत्व समझाया।

स्वयंबुद्ध नेकहा – इसी अलका नगरी में विद्याधरों के वंश में राजा दण्ड नाम का महाप्रतापी राजा हुआ। उसके पुत्र का नाम मणिमाली था। जीवन के अंतिम समय में राजा दण्ड राज्य का कार्य मणिमाली को देकर भोगों में लिप्त हो गया। राजा भोग विलास के परिणामों से मरकर अपने ही खजाने में अजगर बनकर उत्पन्न हुआ। वह अजगर अपने पुत्र के अतिरिक्त किसी भी व्यक्ति को खजाने के पास नहीं जाने देता था।

एक दिन राजा मणिमाली एक दिन अवधिज्ञानी मुनिराज के दर्शन करने के लिये गया और मुनिवर की अमृतमयी वाणी सुनकर उस अजगर के बारे में पूछा। मुनिवर ने बताया कि वह अजगर आपके पिता का ही जीव है। भोग विलास की भावना अधिक होने से वह अजगर की पर्याय में पैदा हुये हैं।

राजा मणिमाली को अपने पिता के बारे में सुनकर बहुत दु:ख हुआ। राजा मणिमाली खजाने में जाकर अजगर को संबोधित करते हुये कहा कि हे जीव ! इस जगत में कोई भी इन्द्रिय भोगों से तृप्त नहीं हुआ। यह संसार अवगुणों का समूह है। आप भोगों में लीन रहे इसलिये आप इस दु:खमयी पर्याय में पैदा हुये हैं। अपने पुत्र के वाक्यों के सुनकर अजगर को पूर्व भव का स्मरण हो गया। उसे अपने पिछले जीवन पर बहुत पश्चाताप हुआ। उस अजगर ने आहार–पानी का त्याग कर दिया। शरीर से राग छोड़ दिया। वह समाधिमरण पूर्वक मरकर स्वर्ग में ऋद्धिधारक देव हुआ। वह देव मणिमाली के पास आया और उपकार व्यक्त करते हुये उसे रत्नों का हार भेंट दिया।

यह घटना सुनाते हुये स्वयंबुद्ध ने राजा महाबल से कहा कि आपने जो हार पहना हुआ यह उसी देव द्वारा दिया गया हार है। आपको यह ज्ञात हुआ होगा कि धर्म से मानव का उद्धार होता है और अधर्म से पतन होता है। राजा महाबल ने स्वयंबुद्ध की प्रशंसा करते हुये इस धर्म उपदेश के लिये धन्यवाद दिया।

प्रेरक प्रसंग

असीम और अनंत बनो

कुंए ने अपने पिता समुद्र से शिकायत करते हुए कहा – पिताजी! सभी नदी नाले आपके घर में स्थान पाते हैं। आप प्रेमपूर्वक उन्हें अपने घर में स्थान देते हैं। मुझसे ही पक्षपात क्यों ? आप मुझे स्थान क्यों नहीं देते ? पिता के लिए तो सभी पुत्र एक से होते है। समुद्र ने उत्तर दिया– पुत्र ! तुम अपने चारों ओर दीवार बनाकर बैठ गये हो, इसलिये तुम्हें अपने जन्मसिद्ध अधिकार से वंचित रहना पड़ा है। असीम का, अनन्त का प्यार पाने के लिए स्वयं को भी असीम बनना पड़ता है। अपनी सीमाओं का त्याग करके उन्मुक्त रूप से अपने आपको व्यक्त करो, अपनी दीवारों को हटा दो। धरती को हरी भरी तृप्त करती हुई तुम्हारी धारा जब बन्धनमुक्त हो उठेगी तब तुम सहज ही मुझमें आकर समा जाओगे।

मारने का अधिकार नहीं

शांतिनिकेतन में एक कुत्ता सख़्त बीमार था। उसे कष्ट अधिक था । उसे छटपटाते देख कर एक प्रोफेसर ने रवीन्द्रनाथ टैगोर से कहा – गुरुदेव ! इसका कष्ट तो देखा नहीं जाता, इसे तो गोली मार देनी चाहिये, जिससे यह इस कष्ट से छूट जाए। रवीन्द्रनाथजी टैगोर ने कहा – भाई ! यदि इस कुत्ते की जगह हमारे या तुम्हारे कुटुम्ब का कोई आदमी बीमार हो और वह इसी तरह तड़फ रहा हो तो क्या उसे गोली मारकर ही दुख से छुड़ाओगे ? यह सुनकर प्रोफेसर को अपनी गलती का अहसास हो गया।

तीर्थंकर भगवन्तों की विशेषतायें

1. तीर्थंकर की दाढ़ी – मूंछ नहीं होती है।
2. तीर्थंकर बालक माता का दूध नहीं पीते किन्तु उनके दाहिने अंगूठे में ही इन्द्र अमृत लगा देते हैं जिसे चूसकर तीर्थंकर बड़े होते हैं।
3. तीर्थंकर गृहस्थ अवस्था में देवों द्वारा लाया हुआ भोजन करते हैं और देवों द्वारा लाये गये वस्त्र और आभूषण पहनते हैं।
4. तीर्थंकर का कोई गुरु नहीं होता, वे स्वयं दीक्षा लेते हैं।
5. तीर्थंकर को किसी भी अवस्था में मंदिर जाना आवश्यक नहीं होता।
6. तीर्थंकर की गृहस्थ अवस्था और मुनि अवस्था में कभी अन्य मुनिराज से मुलाकात नहीं होती।
7. तीर्थंकरों के कल्याणकों के समय तीन लोकों के सभी जीवों को कुछ क्षण के लिये शांति का अनुभव होता है।
8. तीर्थंकर मात्र सिद्ध परमेष्ठी कोही नमस्कार करते हैं अत: "ओम् नम: सिद्धेभ्य:" कहते हैं।
9. तीर्थंकर के दाहिने पैर के अंगूठे पर जो चिन्ह दिखता है, वह इन्द्र द्वारा उन्हीं तीर्थंकर का वह चिन्ह निश्चित होता है। जैसे– तीर्थंकर आदिनाथ का बैल चिन्ह।
10. तीर्थंकर को जन्म से अवधि ज्ञान होता है।
11. तीर्थंकर को दीक्षा लेते ही मन:पर्यय ज्ञान हो जाता है।
12. तीर्थंकर अपनी माता–पिता की अकेली सन्तान होते हैं।
13. तीर्थंकरों की माता को सोलह स्वप्न आते हैं।
14. तीर्थंकरों के श्रीवत्स (सीने पर निशान) नियम से होता है।
15. तीर्थंकरों की दिव्यध्वनि नियम से खिरती है।

सेव ने गलाया मान

एक अत्यंत सुन्दर नर्तकी थी। जो भी उसे देखता, देखता ही रह जाता। उसे भी अपने रूप पर बहुत अभिमान था। वह सदा दर्पण के सामने खड़े होकर अपना रूप देखा करती थी। एक दिन वह अपने विशाल भवन की खिड़की से बाहर देख रही थी। उसने देखा कि बाहर एक युवा सन्यासी जा रहा है। उस सन्यासी की सुन्दरता को देखकर वह नर्तकी उस पर मोहित हो गई।

उसने दासी को बुलाकर कहा – उस सन्यासी को तुरंत बुलाकर लाओ। उससे कहना कि मालकिन स्वयं अपने हाथों से आपको दान चाहती हैं। दासी ने तुरंत जाकर उस सन्यासी को मालकिन का संदेश सुना दिया। सन्यासी भवन के अंदर आया और नर्तकी के सामने आकर खड़ा हो गया। नर्तकी उस सन्यासी को अपनी ओर आकर्षित करने का प्रयास करने लगी। सन्यासी ने अपने नेत्र नीचे कर लिये। उसने अपने भिक्षा पात्र में से एक सड़ा हुआ सेव उसके सामने रख दिया और वापस लौटने लगा। नर्तकी को लगा कि सन्यासी उसका अपमान कर रहा है। उसने क्रोध से चिल्लाते हुये कहा – दासियो! इस सन्यासी को पकड़ लो।

सन्यासी ने अत्यंत शांत कहा – मैं कहीं भागने वाला नहीं हूँ, बोलो क्या बात है?

नर्तकी ने पूछा – आपने यह सड़ा – गला सेव क्यों रखा?

सन्यासी ने कहा – देखो देवी! कुछ दिन पूर्व यह सेव भी अपने सौन्दर्य से लोगों को आकर्षित करता था। आज यह सड़ गया है, इसमें दुर्गन्ध पैदा हो गई है। यही इस स्थिति इस शरीर की है। जिस शरीर की सुन्दरता पर तुम्हें घमंड है वह रूप एक दिन नष्ट हो जायेगा। इसी बात को बताने के लिये यह सड़ा सेव तुम्हारे सामने रखा है।

यह सुनकर नर्तकी को सारी बात समझ में आ गई। वह सन्यासी से क्षमा मांगते हुये उनके चरणों में गिर पड़ी। अब उसका सारा मान समाप्त हो गया था।

कुरकुरे में प्लास्टिक

बाजार में मिलने वाला कुरकरे चिप्स तो वैसे ही अभक्ष्य है। लेकिन अभी एक प्रयोग से ज्ञात हुआ कि कुरकुरे में प्लास्टिक मिलाया जा रहा है। हमने इस का प्रयोग करते हुये एक कुरकुरे का पैकेट मंगाया और उसमें एक कुरकुरे का पीस निकाल कर उसे जलाया तो कुछ देर बाद वह सिकुड़ता गया और अंत में पूरा जल गया और इसके जलाने पर जो बदबू निकली वह बहुत गंदी थी। यदि आप भी कुरकुरे जैसे कोई भी अभक्ष्य चिप्स खाते हैं तो आज ही उसका त्याग करें।

अजीनामोटो

सफेद रंग का चमकीला सा दिखनेवाला मोनासोडियम ग्लूटामेट यानी अजीनोमोटा एक सोडियम साल्ट है। यदि आप चाइनीज डिश के दीवाने हैं तो यह आपको उसमें जरुर मिल जायेगा। यह उसमें एक मसाले के रूप में प्रयोग किया जाता है। यह खाने का स्वाद बढ़ाने वाला मसाला वास्तव में यह धीमा जहर खाने का स्वाद नहीं बढ़ाता बल्कि हमारी स्वाद ग्रन्थियों के कार्य को दबा देता है जिससे आपको खाने के बुरे स्वाद का पता नहीं चलता। इसमें मांसाहारी वस्तुओं को प्रयोग किया जाता है अत: यह महाअपवित्र है। इसका आज ही त्याग करें।

चक्रवर्ती के 14 रत्न

चक्रवर्ती के पास अतुलनीय वैभव होता है। वे 14 रत्नों व रत्नों की 9 निधियो के स्वामी होते हैं। वे 7 प्रकार की सेना, दशांग भोग, 32000 मुकुटबद्ध राजा, 96000 रानियों के स्वामी होते हैं। चक्रवर्ती के 3 करोड़ 50 हजार सगे सम्बन्धी, 360 रसोईये और 360 वैद्य होते हैं।

चौदह रत्न और उनके कार्य –

1. चक्र रत्न – बैरियों का संहार करना।
2. छत्ररत्न – सेना के उप्पर आने वाली धूप, वर्षा, ओले आदि से रक्षा करना।
3. असिरत्न – चक्रवर्ती के मन को प्रसन्न रखता है।
4. दण्डरत्न – 48 कोस की भूमि को साफ और समतल करता है।
5. काकिणी रत्न – गुफा आदि के अंधकार को चन्द्रमा और सूर्य के समान दूर करता है।
6. चर्म रत्न – चक्रवर्ती के सैन्य आदि को नदी आदि पार कराता है।
7. गृहपति रत्न – राजभवन की समस्त व्यवस्था का संचालन और हिसाब रखता है।
8. सेनापति रत्न – आर्यखण्ड एवं पांच म्लेच्छ खण्डों पर विजय दिलाता है।
9. पुरोहित रत्न – सबको धर्म कर्म के अनुष्ठान में मार्गदर्शन करता है।
10. रथपति रत्न – चक्रवर्ती की इच्छानुसार महल, मंदिर और अन्य भवन आदि तैयार करता है।
11. स्त्री रत्न – चक्रवर्ती की पटरानी।
12. हाथी – शत्रु राजाओं के राजसमूह को छिन्न-भिन्न करता है।
13. मणि रत्न – इच्छा के अनुसार पदार्थों की प्राप्ति कराता है।
14. अश्व रत्न – तिमिस्र गुफा के द्वार को खोलते समय 12 योजन लम्बी छलांग लगाता है।

प्रेरक प्रसंग

निर्णय

बरुआ सागर झांसी (उ.प्र.) में सेठ मूलचंदजी के यहाँ पुत्र का जन्म हुआ। यह उनके पहला पुत्र था। उसका नाम श्रेयांस कुमार रखा गया। सेठ ने प्रसन्न होकर बहुत धन दान में दिया। कुछ दिन बाद उनकी पत्नी बीमार हो गई और कुछ समय बाद श्रेयांस कुमार को भी गंभीर रूप से बीमार हो गया। काफी इलाज के बाद भी जब पत्नी और पुत्र श्रेयांस स्वस्थ नहीं हुये तब एक ज्योतिषी ने सलाह दी कि एक सोने का राक्षस बनाकर कुंये की पूजा करके उसमें डाल दो तो तुम्हारा बालक स्वस्थ हो जायेगा। सेठ मूलचन्द ने कहा – मेरा लड़का अभी मर जाये, मेरी पत्नी मर जाये, मैं मर जाऊँ, पर मैं ऐसा कोई काम नहीं करुँगा जो जैन शासन के विरुद्ध हो। यदि मेरा पुण्य होगा तो सब ठीक हो जायेंगे और पाप का उदय होगा तो विश्व की कोई ताकत इन्हें ठीक नहीं कर पायेगी। ऐसा था जिनधर्म का पक्का निर्णय।

भाग्य

तिलकमती की सौतेली माता तिलकमती से बहुत द्वेष रखती थी, हमेशा उसका बुरा सोचती थी। सौतेली माता ने छल से अपनी पुत्री तेजमती का विवाह सेठ के पुत्र से कर दिया और रात्रि में तिलकमती का श्रृंगार करके उसके हाथ में वरमाला दी और उसे श्मशान के पास जाने के लिये कहा और बोली कि तेरा पति वहीं पर आयेगा। जो आये तुम उसके गले में वरमाला डाल देना। संयोग से राजा प्रजा का हाल जानने के लिये नगर में घूम रहा था। जैसे ही वह श्मशान के पास आया तिलकमती ने राजा के गले में वरमाला डाल दी। राजा ने उसे अपनी पत्नी स्वीकार कर लिया और तिलकमती रानी बन गई। भाग्य बहुत बलवान है।

शील की रक्षा

औरंगजेब बादशाह हिन्दुओं पर अत्याचार करता था, साथ उसके सैनिक और अन्य अधिकारी भी हिन्दुओं पर बहुत अत्याचार करते थे। जब कोई मुसलमान अधिकारी किसी नगर में घूमने निकलते थे तब प्रजा में घबराहट फैल जाती थी, लोग अपने आपको घरों के अंदर बंद कर लेते थे। वे मुसलमान अधिकारी हिन्दु प्रजा को लूटते थे, उनकी सुन्दर बेटियों को उठाकर ले जाते थे और मंदिरों को तोड़ देते थे।

एक बार बिहार प्रान्त के एक जिले का शासक मिर्जा अपने सिपाहियों के साथ नाव में बैठकर गंगा नदी में घूम रहा था। उसने देखा कि नदी के किनारे कुछ लड़कियाँ स्नान कर रही हैं। उनमें से एक लड़की बहुत सुन्दर थी। मिर्जा ने अपनी नाव रुकवा दी। मुसलमान सैनिकों को देखकर सब लड़कियाँ डरकर तुरन्त अपने घर चली गईं। मिर्जा ने उस सुन्दर लड़की के बारे में पता लगाया तो पता चला कि वह सुन्दर गांव के ठाकुर होरलसिंह की बहन भगवती है। मिर्जा ने होरल सिंह को बुलवाया और कहा – मैं आपकी बहन को अपनी बेगम बनाना चाहता हूँ और इसके बदले आपको पांच हजार सोने के सिक्के और एक नगर उपहार में दूँगा।

मिर्जा की बात सुनकर ठाकुर होरल सिंह को भयंकर क्रोध आ गया और बोला – चुप रह मिर्जा! ऐसी बात की तो मैं तेरा सिर काट लूँगा। होरल सिंह का यह रूप देखकर मिर्जा ने अपने सिपाहियों को इशारा कर दिया। उन सिपाहियों ने होरल सिंह को पकड़ को पकड़कर उसके हाथ –

पैर बांध दिये। जब यह समाचार होरलसिंह के घर पहुँचा तो होरल सिंह की पत्नी जोर–जोर से रोने लगी और भगवती को डांटने लगी कि तू नदी पर नहाने क्यों गई थी ? न तू नदी पर जाती और न ही मिर्जा तुझे देखता.....। भगवती ने अपनी भाभी से कहा – भाभी! आप रो मत। मैं भैया को छुड़ाकर लाउंग्गी। भगवती भागकर मिर्जा के सामने पहुँची और मिर्जा से कहा – मिर्जा साहब! आप व्यर्थ ही परेशान हो रहे हैं। मैं आपकी पत्नी बनूं यह तो मेरा ही सौभाग्य है। आप मेरे भाई को छोड़ दीजिये मैं आपके साथ चलने के लिये तैयार हूँ।

मिर्जा भगवती की बात सुनकर आश्चर्यचकित हो गया। उसे विश्वास ही नहीं हो रहा था कि भगवती उसे इतनी आसानी से मिल जायेगी। उसने होरल सिंह को छोड़ दिया। तब भगवती ने कहा – मुझे नाव पर डर लगता है, मैं पालकी पर चलूँगी आप मेरे लिये पालकी मंगा दीजिये। मिर्जा ने तुरन्त एक सुन्दर पालकी मंगवाई। सेवक पालकी में भगवती को बिठाकर चलने लगे और मिर्जा नाव से अपने महल वापस आने लगा। रास्ते में भगवती ने सेवकों से कहा – मुझे बहुत प्यास लगी है। यह तालाब मेरे पिता ने बनवाया था, मैं इस तालाब का पानी पीकर उनका आशीर्वाद लेना चाहती हूँ। सेवकों ने भगवती की इच्छा जानकर पालकी रोककर उसे पानी पीने जाने दिया। भगवती अकेली तालाब के पास गई और उँचाई पर जाकर पानी में छलांग लगा दी। सेवक यह देखकर घबरा गये और तुरन्त गांव से जाल लाकर पानी में डाला। लेकिन भगवती के प्राण निकल चुके थे। जैसे ही मिर्जा और होरलसिंह को पता चला वे भागकर आये तो भगवती का शरीर ही तालाब से निकला गया था। सभी समझ गये कि भगवती ने शील और अपने परिवार के सन्मान की रक्षा के लिये अपने प्राण त्याग दिये। ऐसी महान नारी थी भगवती।

– वीर बालिका से साभार

अब नहीं लगाऊँगी

(सत्य घटना पर आधारित)

एक प्यारी सी लडकी है, उसका नाम है विशुद्धि। जिनधर्म से बहुत प्रेम है उसे। प्रतिदिन जिनमंदिर जाती और प्रसन्न रहती। पिछले वर्ष की बात है। प्रतिदिन की तरह जब वह मंदिर गई तो उसकी नजर मंदिर में नोटिस बोर्ड पर चली गई तो देखा एक पत्रिका लगी थी उसमें लिखा कि जबलपुर नगर में जैनत्व बाल संस्कार शिविर का आयोजन होने वाला है। उसने सोच लिया कि मैं भी इस शिविर में जाकर जिनधर्म की बातें सीखूँगी। उसने घर पर आकर मम्मी से पूछा तो मम्मी ने प्रसन्नता से शिविर में जाने की अनुमति दे दी। उसने अत्यंत उत्साह से शिविर में सहभागिता की और शिविर में उसे पता चला कि जमीकंद में अनंत जीव होते हैं। आलू–प्याज आदि के सेवन से होने वाली अनंत हिंसा से बचने के लिये उसने आजीवन आलू–प्याज आदि जमीकंद का त्याग कर दिया। यह बात उसने घर पर आकर अपने भाई को बताई तो उसने उसका मजाक उड़ाया। इस वर्ष महावीर जयंती के पवित्र दिन उसके भाई ने आलू की सब्जी खाई तो विशुद्धि को बहुत दु:ख हुआ। उसने सोचा – मेरे भाई का पापों का बिल्कुल भी डर नहीं है, उसने आज महावीर जयंती के पवित्र दिन में आलू की सब्जी खाकर अनंत जीवों का घात किया है। आज मेरा उपवास है। मैं आज भोजन–पानी ग्रहण नहीं करूँगी। विशुद्धि ने पूरा दिन बिना भोजन के व्यतीत किया।

इस वर्ष 7 मई से 14 मई तक जबलपुर में पुन: शिविर लगा तो विशुद्धि इस वर्ष भी शिविर में शामिल हुई। एक दिन आमंत्रित विद्धानों ने अपनी कक्षा में बताया कि कोलगेट जैसे टूथपेस्ट में हड्डी का पाउडर मिलाया जाता है और साथ ही फेयर एण्ड लवली क्रीम में भी पशुओं की

चर्बी का प्रयोग किया जाता है। हमारे दांतों की सुन्दरता और चेहरे के गोरेपन के लिये हर दिन हजारों पशुओं को मार डाला जाता है। कत्लखाने में पशुओं पर होने वाले भयंकर अत्याचार का एक वीडियो सारे बच्चों को दिखाया गया। यह देखकर विशुद्धि तुरन्त अपने कमरे में गई और वहाँ से फेयर एण्ड लवली का पाउच और कोलगेट पेस्ट एक विद्वान को देकर बोली – भैया! आज से मैं पेस्ट और क्रीम का आजीवन त्याग करती हूँ। इतना कहकर वह चली गई। कुछ देर बाद दूसरे बच्चों ने बताया कि विशुद्धि रो रही है। एक विद्वान ने विशुद्धि के पास जाकर पूछा तो उसने रोते हुये कहा – भैया! मुझे बहुत रोना आ रहा है। मैं पिछले कुछ वर्षों से यह क्रीम लगा रही थी और पेस्ट भी कर रही थी मेरे कारण कितने जानवरों की हत्या हुई होगी। मैंने बहुत पाप किये हैं। पर भैया! मैं आज से वादा करती हूँ आज से ऐसा कोई पदार्थ उपयोग में नहीं लूँगी जिसमें निर्दोष प्राणियों की हत्या हुई हो।

संस्था द्वारा 5000 रु. में संस्था की 15 वर्षीय सदस्यता प्रदान की जाती है।
इस योजना में नवीन सदस्यों के नाम -

1. रमणीक भाई सावला, देवलाली
2. श्रीमति प्रगति नरेश जैन, गोधरा गुज. 3. श्री अंकित शास्त्री, लूणदा, उदयपुर

■ 5000/- श्री सुदीप शास्त्री, बरगी जि. जबलपुर की ओर से प्रचार-प्रसार हेतु प्राप्त।

अभिमान का कोई आधार नहीं होता

राजस्थान प्रांत के एक जिले में छोटा सा गांव था। उस गांव के जमीदार को अपनी जागीर का बड़ा अभिमान था। अपने अहंकार के सामने वह किसी को भी कुछ नहीं समझता था। सारे गांव के व्यक्ति उसके इस अभिमान से नाखुश थे क्योकि वह अपने सामने सभी का अपमान कर देता था। एक बार वह बड़े शहर में पहुंचा । वहां भी अपने संपत्ति की प्रशंसा करने लगा। इसी बीच एक बार एक दार्शनिक से उसकी मुलाकात हुई। जब वह अपनी जागीर की बहुत ज्यादा तारीफ करने लगा तो दार्शनिक को लगा कि इसके झूठे अभिमान को किसी तरह इसे समझाकर तोड़ना है। उन्होंने भारतवर्ष का नक्शा निकालकर उसे दिखाया और पूछा–बताओ ! इस नक्शे में राजस्थान कहाँ है ? उसने उंगली रखकर बता दिया। फिर उससे पूछा – तुम्हारा जिला कहाँ पर है? उस नक्शे में उस जिले को एक छोटे से बिंदु के रूप में दिखाया गया था। उस जागीरदार ने काफी खोजबीन करके वह बिंदु दिखला दिया। अब दार्शनिक ने पूछा– बताओ ! तुम्हारा गांव इस नक्शे में कहाँ पर है ? जागीरदार बहुत देर तक उस नक्शे को देखता रहा पर उसके गांव का कोई बिंदु तक उस नक्शे में उसे नजर नहीं आया। तब दार्शनिक ने उसे समझाया–देखो ! जब इतने बड़े नक्शे में तुम्हारे गांव का बिल्कुल नामोनिशान नहीं है। तब तुम किस बात पर गर्व करते हो ? तुम्हारी तरह के हजारों गांव भारतवर्ष के हर प्रांत में फैले हुए हैं। तुम्हें अहंकार करने को स्थान ही कहाँ है और फिर क्या तुम सदाकाल अपने गांव में अमर रहने वाले हो ? जब तुम्हीं सदाकाल जीवित रहने वाले नहीं हो और तुम्हारी यह पर्याय नियम से बदलने वाली है तो फिर अभिमान किस बात का ?

जागीरदार की आंखें खुल गईं। अभिमान का कोई आधार नहीं होता–यही जैनाचार्यों का अमर संदेश है। विचार करें हमें जिस सम्पत्ति का अभिमान है वह कितनी है और अभिमान कितना ।

प्रश्न आपके – उत्तर जिनवाणी के

प्रश्न 1– किसी का शाम को स्वर्गवास हुआ हो तो रात्रि में शव जलाना चाहिये या प्रात: दाह संस्कार करना चाहिये ?

उत्तर– मृत्यु के बाद शव में अनंत पंचेन्द्रिय जीव लब्ध पर्याप्तक सूक्ष्म मनुष्य आकार जीव उत्पन्न होने लगते हैं। इसलिये दाह संस्कार रात्रि को भी तत्काल कर देना चाहिये। यद्यपि रात्रि को जीवों हिंसा तो होगी लेकिन रात भर शव रखने के बाद प्रात: दाह संस्कार करेंगे तो उसमें रात्रि से अनंतगुनी हिंसा होगी।

प्रश्न 2– जहां समवशरण बनता है उस स्थान के रहने वाले छोटे–छोटे जीव कहां चले जाते हैं ?

उत्तर– देव के द्वारा किये जाने वाले अतिशय के प्रभाव से समवशरण की भूमि जीव रहित हो जाती है। पूरी भूमि कांटों एवं धूल से रहित हो जाती है।

प्रश्न 3– दिगम्बर जिनप्रतिमा में भगवान का दांया हाथ ऊपर रहता है या बांया ?

उत्तर– दिगम्बर जिनप्रतिमा में भगवान का दाहिना हाथ ऊपर रहता है।

प्रश्न 4– दुनिया में सर्वश्रेष्ठ वस्तु क्या है ?

उत्तम– अपना आत्मा।

प्रश्न 5– क्या किसी निर्दोष को बचाने के लिये बोले गये झूठ से पाप लगता है ?

उत्तर– अहिंसा और सत्य की रक्षा के लिये झूठ बोलना पाप नहीं है।

प्रश्न 6– रात्रि में अधिक लाइट जलाकर भोजन करने में क्या पाप है ? अच्छी लाईट में हम भोजन देखकर खा सकते हैं ?

उत्तर– जीवों की उत्पत्ति रात्रि में वातावरण के प्रभाव से अधिक होती है और कई जीव इतने सूक्ष्म होते हैं कि वे आंखों से दिखाई नहीं देते। इसलिये रात्रि भोजन में पाप ही है।

वे कौन थीं

1. वे कौन थीं जिनसे रावण की पत्नी मंदोदरी ने आर्यिका दीक्षा ली ?

उत्तर : आर्यिका शशिकान्ता।

2. वे कौन थीं जो कुन्दकुन्द स्वामी की गृहस्थ अवस्था में माता थीं ?

उत्तर : श्रीमतिजी।

3. वे कौन थीं जिसने विद्या सिद्धि के लिये 12 वर्ष तक तप किया था ?

उत्तर : मणिमति (सीता का पूर्व भव)

4. वे कौन जैन नारी थीं जिन्हें भारत सरकार ने पद्मश्री की उपाधि दी है ?

उत्तर : ब्र. पंडिता सुमतिबाई शाह।

5. वे कौन थीं जिसका पति मरकर मेंढक बन गया था ?

उत्तर : भवदत्ता।

6. वे कौन थीं जो मायावी 25वें तीर्थंकर, 12वें रुद्र व 10वें वासुदेव को देखने नहीं गई ?

उत्तर : रानी रेवती

7. वे कौन थीं जो अपने पुत्र को जन्म के तुरंत बाद जंगल में छोड़ आई थीं ?

उत्तर : रानी चेलना (कुणिक को)

8. वे कौन थीं जिन्होंने स्वर्ण आर रत्नों की 1000 जिनप्रतिमायें बनवाकर विराजमान करवाई थीं ?

उत्तर : अति मब्बे।

9. वे कौन थीं जिन्होंने नगर में दिगम्बर मुनियों का प्रवेश बंद करवा दिया था ?

उत्तर : यशोभद्रा।

10. वे कौन थीं जिन्हें वृषभदेव श्री अंक विद्या सिखाई थीं ?

उत्तर : सुन्दरी बहन।

11. वे कौन थीं जिनकी दीक्षा को देखकर सेनापति को वैराग्य हो गया था ?

उत्तर : कृतान्तवक्र सेनापति। (सीताजी की दीक्षा देखकर)

12. वे कौन थीं जिन्हें गजकुमार मुनि के दीक्षा और मोक्ष सुनकर वैराग्य हो गया था ?

उत्तर : शिवादेवी।

अहंकार उतर गया

एक बार महाराज भोज की राजसभा में उनके दान की विवरण पढ़ा जा रहा था, अपने द्वारा दिये गये दान की चर्चा सुनकर राजा का हृदय गर्व से फूल गया। अहंकार के नशे में आकर राजा ने अपने सभासदों से कहा "मैंने वह किया है जो आज तक किसी ने नहीं किया, मैंने वह दिया है, जो आज तक किसी ने नहीं दिया ।" राजा के बार–बार ऐसा कहने पर पुराने मन्त्री को चिन्ता होने लगी कि ऐसे अभिमान से राजा का विनाश हो जायेगा।

दूसरे दिन मन्त्री ने महाराज विकमादित्य की पुरानी दानबही निकाल कर राजा भोज को सुनाई। उसमें सबसे पहली पंक्ति में लिखा था कि राजा विकमादित्य ने एक कवि को काव्य सुनाने पर उसे पुरस्कार में निम्न वस्तुयें दीं – आठ करोड़ स्वर्ण मुद्रायें, 63 तुला मोती, पचास हाथी, दस हजार घोड़े और सौ नर्तकियाँ। पूर्व में यह सामग्री दक्षिण के पाण्ड्य राजा ने श्री विकमादित्य को भेंट की थी।

राजा भोज ने आश्चर्य से बार–बार इस विवरण को पढ़ा। उसकी आँखे फटी सी रह गई ? अहंकार पर ऐसी चोट पड़ी कि वह खण्ड – खण्ड होकर बिखर गया। विकम के इस सुमेरू तुल्य दान के समक्ष उसे अपना दान एक मिट्टी के ढेले के बराबर प्रतीत हुआ। कुछ भी तो नहीं। किसका अभिमान ?

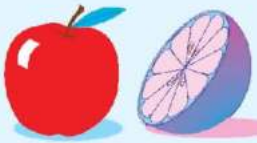

बनाओ

राजू – मम्मी ! नींबू काट दो।

माँ – नहीं बेटा ! काटो नहीं, बना लो बोलो।

राजू – क्यों मम्मी ?

माँ – बेटा ! गाय काटी जाती है।
बकरा काटा जाता है।
काटो शब्द से हिंसा का पाप लगता है।
हम काटते नहीं शोधते हैं
हम काटते नहीं बनाते हैं।

राजू – अच्छा मम्मी ! समझ गया।

माँ – समझ गये तो बताओ और क्या खाओगे ?

राजू – मम्मी ! आम बनाओ, मैं आम भी खाऊँगा।
मम्मी ! ककड़ी शोध दो,
मैं ककड़ी भी खाऊँगा।

माँ – शाबास ! राजू बेटा।

भजन

मैं ज्ञायक स्वभावी आत्मा हूँ
सहजानंद स्वरूपी आत्मा हूँ ।
मैं चेतन हूँ, मैं कुछ नहीं करता,
मैं तो बस जानता और देखता हूँ
मैं सिद्ध सम्पन्न हूँ
बस इतना अंतर हैं उनमें और मुझमें,
वे आठों कर्मों से मुक्त है
हम आठ कर्म से युक्त है ।
जिस तन में मैं रहता हूँ
वह तो पुद्गल है
यह तन मेरा नहीं है
जग में कुछ भी मेरा नहीं है
मैं तो ज्ञायक स्वभावी आत्मा हूँ
मैं तो चिदानंद रूपी आत्मा हूं
सहजानंद स्वरूपी आत्मा हूँ
मैं तो शुद्धात्मा हूँ ।

पाठकों के पत्र

चहकती चेतना ने बदल दिया मेरे बेटे का जीवन

आदरणीय विरागजी, सादर जय जिनेन्द्र।

आपके द्वारा संपादित चहकती चेतना पत्रिका बच्चों और बड़ों दोनों को अच्छी लगती है। जबसे चहकती चेतना घर में आना शुरु हुई है तबसे मेरे 8 वर्षीय बेटे अभिषेक में काफी बदलाव आया है। वह अब बाजार की वस्तुयें नहीं खाता, उसने पेप्सी और कोका कोला का त्याग कर दिया है। धर्म के प्रति उसकी रुचि बढ़ी है। वह अनेक धार्मिक प्रश्न पूछता है। अब वह स्तुति और भजन लिखने लगा है। (इस अंक में अभिषेक का एक गीत प्रकाशित हुआ है।) यह सब चमत्कार चहकती चेतना के कारण हुआ है। मैं चहकती चेतना के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करती हूँ।

ऋतु जैन, रोहिणी दिल्ली

जिसको राखे आयु कर्म मार सके ना कोय

सर्वज्ञ भगवान की वाणी में आया कि कोई किसी को मार या बचा नहीं सकता। संसार का प्रत्येक जीव आयु कर्म के निमित्त से उस पर्याय में रहता है। इसका प्रत्यक्ष उदाहरण देखने को मिला गोरखपुर (उत्तरप्रदेश) के सीकरीगंज के मैंसही गांव में। यह बालिका रिया अपने घर की दूसरी मंजिल पर सो रही थी। रात्रि में बालकनी में बने बाथरूम में जाते समय उसका पैर फिसल गया और वह पड़ोस में बन रहे मकान की छत की बीम पर गिर गई। बीम से निकले हुये सरिये उसके पेट और गर्दन में घुस गये। उसकी चीख सुनकर जब उसके माता-पिता उसके पास गये तो रिया को सरिये में फंसा देखकर उनके होश उड़ गये। तुरंत सरिये काटकर उसे हॉस्पिटल ले जाया गया और डॉक्टरों के प्रयास से उसकी जान बच गई। डॉक्टर आश्चर्यचकित थे कि रिया के लीवर, अमाशय और गर्दन में सरिये आर-पार निकलने के बाद भी वह जीवित थी। सच है जिसका शेष है आयु कर्म मार सके ना कोय।।

कंदमूल एवं अन्य अभक्ष्यों के संदर्भ में वैज्ञानिकों के विचार

सूक्ष्म जीवों का पर्यावरण से घनिष्ठ सम्बन्ध होता है। सूक्ष्मदर्शी की सहायता के बगैर इनका अध्ययन अत्यन्त कठिन एवं असम्भव है। विभिन्न प्रकार के वातावरण में हजारों – लाखों प्रकार के सूक्ष्म जीव निवास करते हैं। कंदमूल इत्यादि वनस्पतियाँ जो कि सीधे मिट्टी में रहती हैं, वास्तव में इन सूक्ष्म जीवों से ही घिरी रहती है। इन जीवों में प्रोटोजोआ, आर्थीपोडा, मौलस्का, शैवाल, फफूंद, बैक्टीरिया इत्यादि प्रमुख हैं।

जैन दर्शन में इन कंदमूलों को अभक्ष्य बताया गया है जो कि वास्तव में सत्य है। इनके भक्षण से इनके आस–पास की मिट्टी खोदना पड़ता है जिसमें कि हजारों सूक्ष्म जीव निवास करते हैं।

वैज्ञानिकों ने खोजों के आधार पर सिद्ध किया है कि पृथ्वी पर लगभग 50 लाख से एक करोड़ के बीच पौधों एवं जन्तुओं की प्रजातियां मनुष्य द्वारा गलत तरीके से प्रकृति दोहन के परिणामस्वरूप नष्ट हो रही हैं। अध्ययन के अनुसार भारतवर्ष में ही लगभग 45000 प्रकार की वनस्पतियों की प्रजातियां हैं। इनमें लगभग 5000 प्रजातियां ऐसी हैं जो भारत के अलावा अन्यत्र नहीं पाई जाती हैं।

कंदमूल इत्यादि वस्तुतः तना अथवा जड़ों का रूपान्तरण हैं, जिसमें पौधों का खाद्य पदार्थ संचित हो जाता है। इन कंदमूलों के पौधों का जीवन चक्र पूर्ण होने के पूर्व ही उपयोग में लाना उचित नहीं है ? जैन आहार विधि में जितनें भी खाद्य पदार्थ हैं यह परिपक्व अवस्था में उपयोग में लाये जा सकते हैं। वैज्ञानिक दृष्टिकोण से भी यह उचित है।

आधुनिक युग में खेती हेतु उपयोग में लाये जाने वाले कीटाणुनाशक दवाओं का सीधा एवं अधिक प्रभाव इन कंदमूलों पर ही होता है एवं हानिकारक हो जाते हैं।

भूमि के अन्दर नमी एवं अंधेरा होने से इन सूक्ष्म जीवों की अत्यन्त वृद्धि होती हैं, इनके भक्षण में न केवल इन जीवों का नाश होता है अपितु पर्यावरणीय असंतुलन भी उत्पन्न होता है। इसी प्रकार उदुम्बर फलों में भी असंख्य कीटों का वास होता है एवं उनके खाने से हिंसा होती है। वैसे जैन आहार में जितनी भी भक्ष्य वनस्पतियां वर्णित हैं वह वनस्पतियों के अनुसार एक ही पुष्प से विकसित होती हैं। बहुपुष्पीय फलों के भक्षण का निषेध है जो कि वस्तुतः सत्य है। इन फलों में प्रमुख रूप से कटहल, शहतूत, उदुम्बर फल इत्यादि प्रमुख हैं।

जैन धर्म में आध्यात्मिक शुद्धि के साथ–साथ शारीरिक एवं वातावरण की शुद्धि को भी विशेष महत्व दिया गया है।

आधुनिक विज्ञान ने सिद्ध कर दिया है कि हमारे पर्यावरण के प्रत्येक अवयव अर्थात् भूमि, जल, वायु, वनस्पतियों, जन्तुओं एवं मानव के अन्दर एवं बाहर अनेकों प्रकार के सूक्ष्म जीव पाये जाते हैं। यह सूक्ष्म जीव, जीवाणु (बैक्टीरिया) विषाणु (बाइरस) कवक इत्यादि वर्गों के होते हैं। इन्हें वैज्ञानिकों ने पादप (पौधों) वर्ग में रखा है। यह जीव केवल सूक्ष्मदर्शी यंत्रों की सहायता से ही देखे जा सकते हैं, अर्थात् साधारण आंख से देखना सम्भव नहीं है। इन्हीं सूक्ष्म जीवों का विस्तृत अध्ययन सूक्ष्म जीव विज्ञान (माइक्रोबायलॉजी) कहलाता है। इनका आकार एक मिलीमीटर के दस हजारवें भाग से भी कम हो सकता है। उचित वातावरण मिलने पर यह जीव कुछ ही क्षणों में विभाजित होकर असंख्य हो जाते हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि जैनधर्म में बताये गये निगोदिया जीव शायद यही हैं।

अतः जमीकंद का सेवन किसी भी तरह से उचित नहीं है।

समाचार

"जिनशासन के रंग" ड्राइंग बुक तैयार

आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन, जबलपुर द्वारा बच्चों के लिये धार्मिक संस्कारयुक्त सामग्री देने के लिये नवीन गतिविधि के अंतर्गत एक आकर्षक धार्मिक डाइंग बुक तैयार की गई है। इस डांइग बुक में चारों अनुयोग सम्बन्धित 16 चित्र दिये गये हैं। जिनमें अपनी स्वेच्छानुसार रंग भर सकते हैं। प्रत्येक चित्र के साथ हिन्दी तथा अंग्रेजी में चित्र का परिचय दिया गया है। साथ ही चार पेज खाली दिये हैं, इन पेजों में अपनी कल्पना अनुसार कोई भी धार्मिक चित्र बना सकते हैं। यह डांइग बुक जबलपुर, उज्जैन, देवलाली, कोटा, छिन्दवाड़ा, द्रोणगिरि के बाल शिविरों में बच्चों को वितरित की गई। इस पुस्तक का प्रकाशन कुन्दकुन्द प्रवचन प्रसारण संस्थान उज्जैन, श्री दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल जवेरी बाजार मुम्बई, अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन हिंगोली, अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन जबलपुर, श्री 1008 दिगम्बर जिनमंदिर वीर सागर नगर पंढरपुर जि. सोलापुर महाराष्ट्र, मध्यवर्ती वीतराग स्वाध्याय मंडल, महा., श्री अविरल शास्त्री, विदिशा के सहयोग से किया जा गया है। इस बुक को प्राप्त करने के लिये आप संस्था से संपर्क कर सकते हैं। राशि मात्र 25 रु.।

कठपुतली पर आधारित जिनधर्म की कहानियों की सी.डी. का विमोचन

आचार्य कुन्कुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन, जबलपुर द्वारा विगत 12 वर्षों से बच्चों को जिनधर्म संस्कार प्रेरक सामग्री उपलब्ध कराई जा रही है। इस क्रम में एक नई वीडियो सी.डी. "जिनधर्म की बात - कठपुतली के साथ" का निर्माण किया गया है। इस सी.डी. में तीन पौराणिक कहानियों को अत्यंत रोचक ढंग से प्रस्तुत किया गया है। साथ में एक सुन्दर गीत भी है। इस सी.डी. के निर्माण में श्री दिलीप सेठी कोलकाता, श्रीमति रेवाबेन नागरदास टिम्बड़िया, (राजकोट) कोलकाता, श्रीमति भारतीबेन विपिनभाई भायाणी अमेरिका, श्री सुरेन्द्र पाटोदी कोलकाता, श्रीमति नयना बेन हर्षदभाई शाह मुलुण्ड-मुम्बई, श्री अक्षत नितेश जैन मुम्बई आदि महानुभावों का आर्थिक सहयोग प्राप्त हुआ है। इस सी.डी. का निर्देशन एवं गीत व संवाद रचना विराग शास्त्री, जबलपुर द्वारा की गई है।

देश के अनेक नगरों में जैनत्व बाल संस्कार शिविर सानंद संपन्न

ग्रीष्मकालीन अवकाश के अवसर पर देश में प्रतिवर्ष आयोजित किये जाने वाले अनेक स्थानों जैनत्व बाल संस्कार शिविर सांनद संपन्न हुये।

देवलाली - यहाँ 14 वाँ बाल संस्कार आवासीय शिक्षण शिविर पूज्य श्री कानजी स्वामी स्मारक ट्रस्ट, देवलाली के विशाल प्रांगण में अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन मुम्बई शाखा द्वारा संपन्न हुआ। दिनांक 24 मई से 30 मई तक आयोजित इस शिविर में महाराष्ट्र और मुम्बई के 300 बालक–बालिकाओं ने सहभागिता की। इस कार्यक्रम में श्री वीनूभाई शाह और श्री उल्लासभाई शाह मुम्बई का विशेष योगदान रहा।

उज्जैन - यहाँ दिनांक 6 मई से 9 मई तक बाल संस्कार शिविर का आयोजन किया गया। श्री सीमंधर स्वामी दिगम्बर जिन मंदिर, क्षीरसागर में आयोजित इस शिविर में सैकड़ों बच्चों ने सहभागिता की। इस कार्यक्रम में ब्र.सुमतप्रकाशजी जैन विशेष रूप से उपस्थित थे।

जबलपुर - अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन जबलपुर द्वारा दिनांक 07 मई से 14 मई तक बाल संस्कार आवासीय शिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। ग्रीन वैली स्कूल, करमेता के विशाल प्रांगण में आयोजित इस शिविर में जबलपुर व आसपास के अनेक नगरों के लगभग 350 बालक–बालिकाओं ने सहभागिता की।

इंदौर - श्री पंचबालयति जिनमंदिर,साधना नगर में 5 मई से 12 मई तक बाल संस्कार शिविर संपन्न हुआ। इस शिविर में नगर के लगभग 800 बालक–बालिकाओं ने सहभागिता की।

छिन्दवाड़ा - अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन छिन्दवाड़ा द्वारा दिनांक 06 जून से दिनांक 13 जून तक बाल युवा–वनिता संस्कार शिविर का आयोजन किया गया।

कोटा - यहाँ दिनांक 15 जून से 24 जून तक बाल संस्कार शिविर का आयोजन किया गया।

इन समस्त शिविरों में प्रार्थना, पूजन, सामूहिक कक्षा, सैद्धांतिक कक्षाओं आयोजन किया गया। साथ ही शाम को जिनेन्द्र भक्ति और सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये। प्रोजेक्टर के माध्यम से बच्चों को मैगी, बिस्किट, चॉकलेट, नूडल्स, टूथपेस्ट आदि में मांस, हड्डी पाउडर मिलाये जाने की जानकारी दी गई। जिससे प्रभावित होकर लगभग सभी बच्चों ने इन मांसाहारी वस्तुओं का त्याग करने का संकल्प लिया। उज्जैन, जबलपुर, देवलाली, इंदौर में कठपुतली के माध्यम से तीन पौराणिक कहानियों का प्रत्यक्ष मंचन किया गया। यह सारे कार्यक्रम श्री विराग शास्त्री, श्री आशीष शास्त्री टीकमगढ़, श्री विवेक शास्त्री सागर, श्रीमति स्वस्ति जैन जबलपुर आदि विद्वानों के द्वारा संपन्न कराये गये।

बंदर मामा

बंदर मामा कहाँ चले ?
पूंछ दबाकर भाग चले।
परम दिगम्बर मुनि पधारे।
दर्शन करके कर्म जले।

बच्चो! आप जैली बहुत शौक से खाते हैं। पता है वह कैसे बनती है ? हमें जैली की फैक्ट्री की फोटो प्राप्त हुई है। इसमें आप देख रहे होंगे कि पशुओं के मांस और हड्डियों का ढेर लगा हुआ है। इसमें से निकलने वाली चर्बी जैली में मिलाई जाती है। अब निर्णय आप पर है कि आप जैली खायें या नहीं.....!

Gummies or jelly sweets are Gelatin-based Chewy Candy which is made by prolonged boiling of skin, cartilage and bones from animals.

प्रश्न आपके – उत्तर जिनवाणी के

प्रश्न 1– किसी का शाम को स्वर्गवास हुआ हो तो रात्रि में शव जलाना चाहिये या प्रात: दाह संस्कार करना चाहिये ?

उत्तर– मृत्यु के बाद शव में अनंत पंचेन्द्रिय जीव लब्ध पर्याप्तक सूक्ष्म मनुष्य आकार जीव उत्पन्न होने लगते हैं। इसलिये दाह संस्कार रात्रि को भी तत्काल कर देना चाहिये। यद्यपि रात्रि को जीवों हिंसा तो होगी लेकिन रात भर शव रखने के बाद प्रात: दाह संस्कार करेंगे तो उसमें रात्रि से अनंतगुनी हिंसा होगी।

प्रश्न 2– जहां समवशरण बनता है उस स्थान के रहने वाले छोटे–छोटे जीव कहां चले जाते हैं ?

उत्तर– देव के द्वारा किये जाने वाले अतिशय के प्रभाव से समवशरण की भूमि जीव रहित हो जाती है। पूरी भूमि कांटों एवं धूल से रहित हो जाती है।

प्रश्न 3– दिगम्बर जिनप्रतिमा में भगवान का दांया हाथ ऊपर रहता है या बांया ?

उत्तर– दिगम्बर जिनप्रतिमा में भगवान का दाहिना हाथ ऊपर रहता है।

प्रश्न 4– दुनिया में सर्वश्रेष्ठ वस्तु क्या है ?

उत्तम– अपना आत्मा।

प्रश्न 5– क्या किसी निर्दोष को बचाने के लिये बोले गये झूठ से पाप लगता है ?

उत्तर– अहिंसा और सत्य की रक्षा के लिये झूठ बोलना पाप नहीं है।

प्रश्न 6– रात्रि में अधिक लाइट जलाकर भोजन करने में क्या पाप है ? अच्छी लाईट में हम भोजन देखकर खा सकते हैं ?

उत्तर– जीवों की उत्पत्ति रात्रि में वातावरण के प्रभाव से अधिक होती है और कई जीव इतने सूक्ष्म होते हैं कि वे आंखों से दिखाई नहीं देते। इसलिये रात्रि भोजन में पाप ही है।

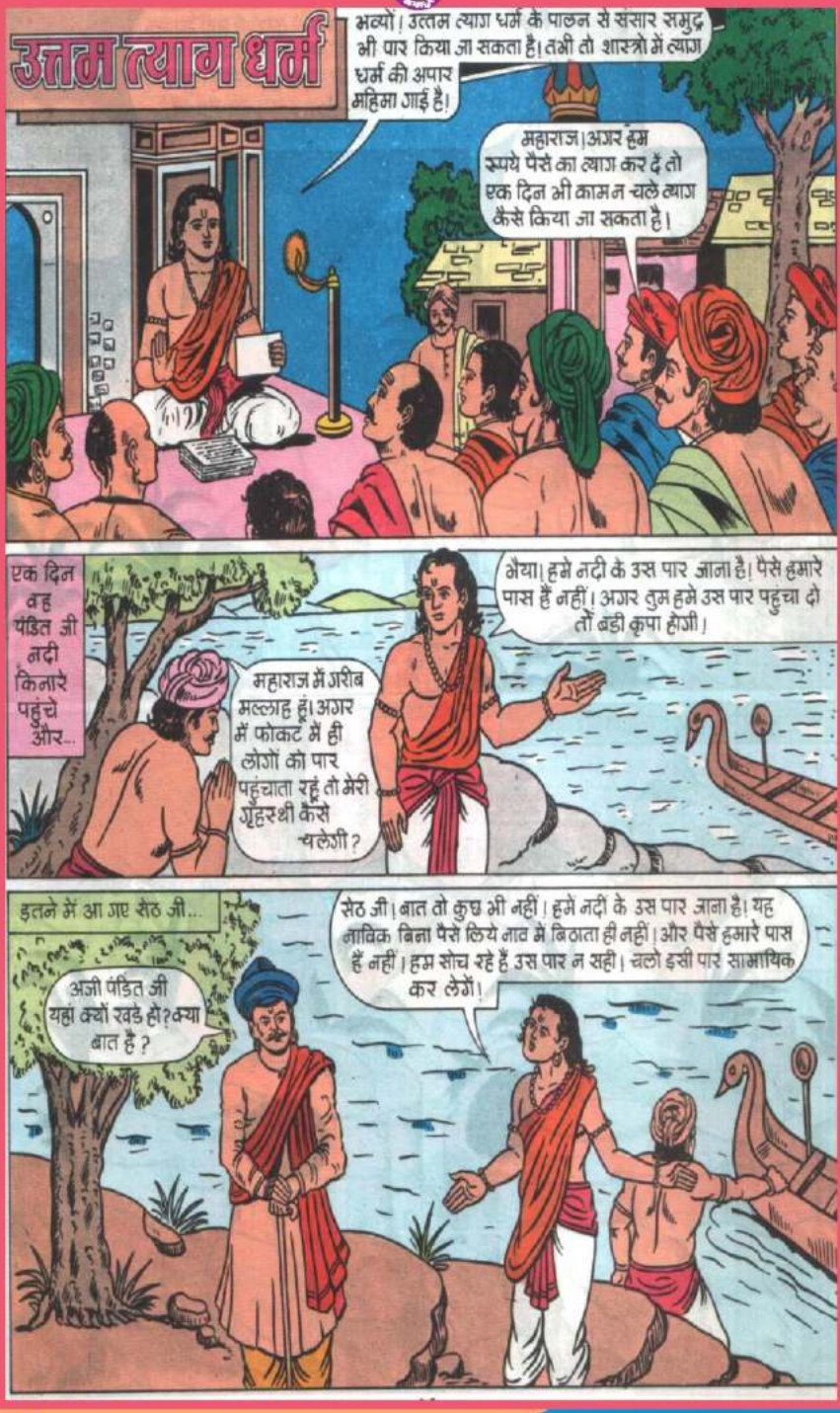
उत्तम त्याग धर्म
भव्यों! उत्तम त्याग धर्म के पालन से संसार समुद्र भी पार किया जा सकता है। तभी तो शास्त्रों में त्याग धर्म की अपार महिमा गाई है।
महाराज! अगर हम रुपये पैसे का त्याग कर दें तो एक दिन भी काम न चले त्याग कैसे किया जा सकता है।
एक दिन वह पंडित जी नदी किनारे पहुंचे और...
भैया! हमें नदी के उस पार जाना है। पैसे हमारे पास हैं नहीं। अगर तुम हमें उस पार पहुंचा दो तो बड़ी कृपा होगी।
महाराज मैं ग़रीब मल्लाह हूं। अगर मैं फोकट में ही लोगों को पार पहुंचाता रहूं तो मेरी गृहस्थी कैसे चलेगी?
इतने में आ गए सेठ जी...
अजी पंडित जी यहां क्यों खड़े हो? क्या बात है?
सेठ जी! बात तो कुछ भी नहीं! हमें नदी के उस पार जाना है। यह नाविक बिना पैसे लिये नाव में बिठाता ही नहीं! और पैसे हमारे पास हैं नहीं। हम सोच रहे हैं उस पार न सही। चलो इसी पार सामायिक कर लेंगे।

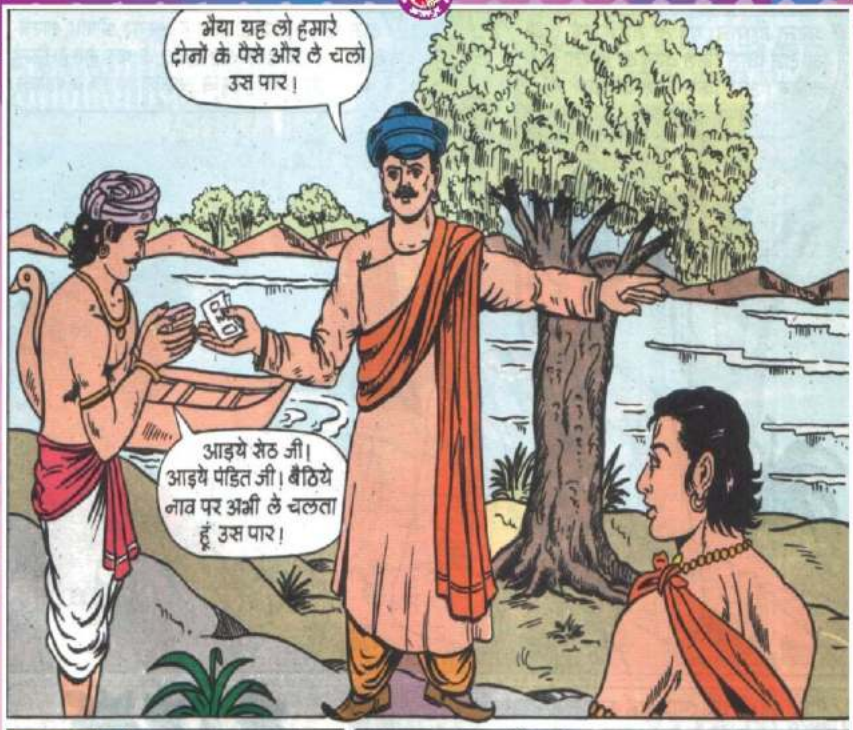
भैया यह लो हमारे दोनों के पैसे और ले चलो उस पार।
आइये सेठ जी। आइये पंडित जी। बैठिये नाव पर अभी ले चलता हूं उस पार।

उस पार पहुंच कर!
महाराज! आप तो कहा करते है कि त्याग से संसार समुद्र को भी पार किया जा सकता है। आप से तो यह छोटी सी नदी भी पार नहीं हो सकी।
भैया तुम भूलते हो। नदी जो पार हुई वह त्याग से ही तो हुई है। अगर तुम पैसे अब से निकाल कर नाविक को न देते। यानि अगर तुम पैसो का त्याग न करते तो नदी कैसे पार होती।

अब समझा पंडित जी। वास्तव में त्याग बिना कल्याण नहीं। अरा त्याग के विषय में मुझे विस्तृत रूप से समझाइये तो सही!
भैया वास्तव में तो हमें राग, द्वेष आदि विकारों का त्याग करना चाहिये जिसे पूर्ण रूप से तो गृह त्यागी दिगम्बर मुनि ही कर सकते हैं। परन्तु व्यवहार में दान को त्याग कहते है।

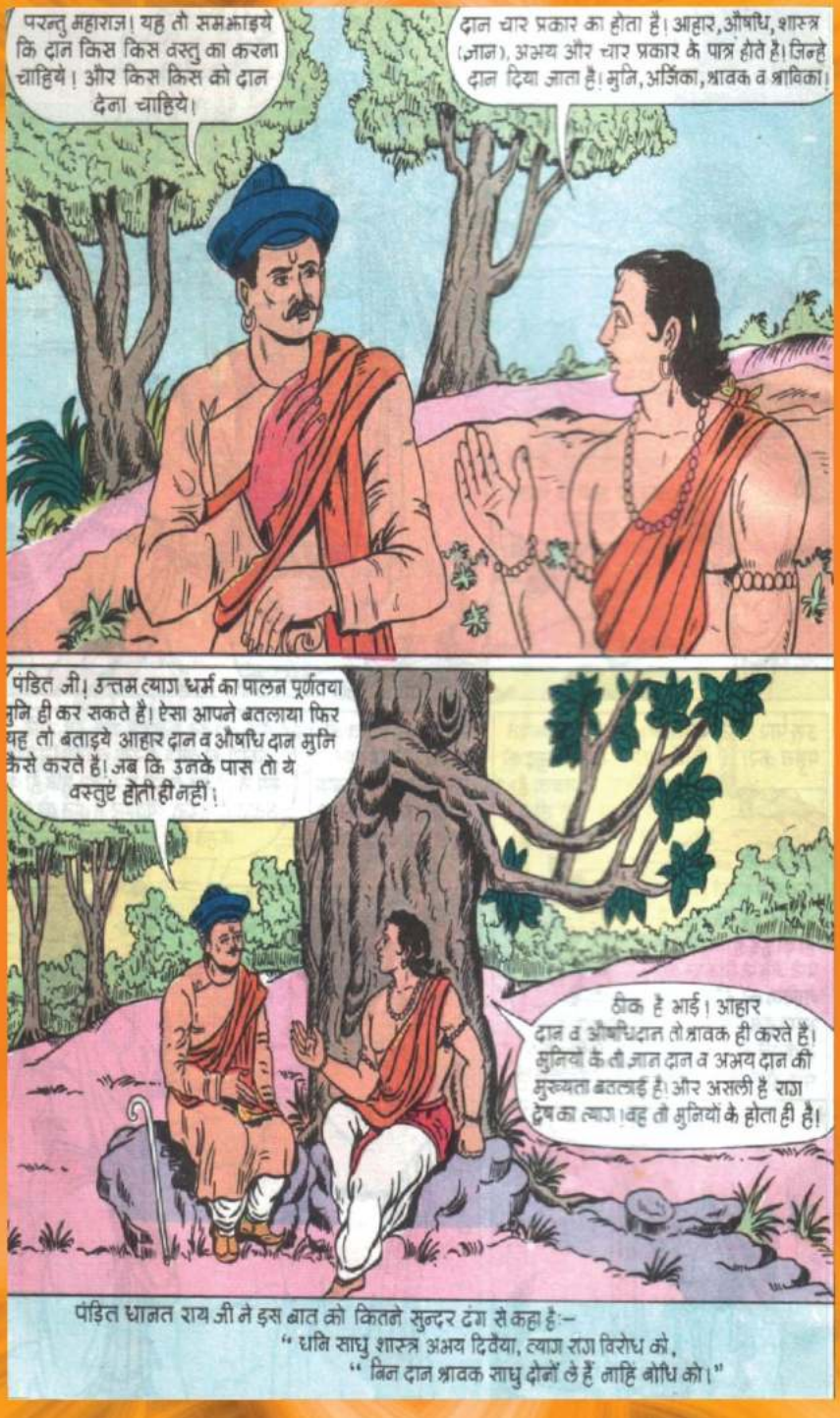

पंडित धानत राय जी ने इस बात को कितने सुन्दर ढंग से कहा है:-

" धनि साधु शास्त्र अभय दिवैया, त्याग राग विरोध को,
" बिन दान श्रावक साधु दोनों लहैं नाहिं बोध को।"

आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन की

नवीन प्रस्तुति

आकर्षक ड्रॉइंग बुक

जिनशासन के रंग

16 धार्मिक चित्र एवं उनके संदेश

कठपुतली पर आधारित

पौराणिक कहानियों की
वीडियो सीडी

कठपुतली के साथ

जिनधर्म की बात

परिकल्पना, संवाद
लेखन एवं निर्देशन
विराग शास्त्री, जबलपुर

संपर्क सूत्र

सर्वोदय, 702, जैन टेलीकॉम, फूटाताल, जबलपुर 482002 (म.प्र.)
मोबा. 9300642434, 09373294684, E-mail : chehaktichetna@yahoo.com